पाठयोजना

महाविद्यालय का नाम — राजनारायण महाविद्यालय, पंडौल
दिनांक — 28-04-2020
कक्षा — स्नातक प्रथम खंड
विषय — इतिहास
पाठ — समुद्रगुप्त की उपलब्धियाँ
यूनिट — 4 (PAPER-I)
लेखक का नाम — मुकेश कुमार राय
अनुक्रमांक — 29

क्रम	शिक्षण बिन्दु	छात्र-अध्यापक क्रिया	श्यामपट्ट
1.	परिचय	चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात उसका सुयोग्य पुत्र समुद्रगुप्त साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। वह लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से उत्पन्न हुआ था। समुद्रगुप्त न केवल गुप्तवंश के बल्कि सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है। इसका काल राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है। समुद्रगुप्त के इतिहास की जानकारी का मुख्य स्रोत हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति लेख है लेकिन इसके अलावा भी अन्य स्रोत उपलब्ध हैं जिनमें एरण का लेख एवं विभिन्न प्रकार के सिक्के प्रमुख हैं। समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल (335 ई० - 375 ई०) में न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की बल्कि सांस्कृतिक क्षेत्र में भी उसके योगदान उल्लेखनीय हैं। समुद्रगुप्त की उपलब्धियों की चर्चा निम्न प्रकार है:—	
2.	सैन्य अभियान	समुद्रगुप्त ने राजगद्दी पर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेने के पश्चात अपना सैन्य अभियान प्रारंभ किया। वह एक महान विजेता था उसकी दिग्विजय का उद्देश्य 'सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना था' प्रयाग प्रशस्ति में इसकी विजयों का विस्तृत विवरण	

Scanned with CamScanner

मिलता है जो इस प्रकार है:—

① **आर्यावर्त की विजय** :- समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त अर्थात उत्तर भारत के कुल 12 राज्यों (3+9) की विजय की है और ये विजयें दो बार में पूर्ण हुईं। आर्यावर्त के अपने प्रथम अभियान में समुद्रगुप्त ने तीन राजाओं - अच्युत, नागसेन एवं कोतकुलज को पराजित किया। इसकी जानकारी प्रयाग प्रशस्ति के 13वीं-14वीं पंक्ति से मिलती है। इसे आर्यावर्त का प्रथम युद्ध कहा गया है। जबकि इसी प्रयाग प्रशस्ति के 21वीं पंक्ति से समुद्रगुप्त के आर्यावर्त के द्वितीय अभियान (दक्षिणापथ की विजय के पश्चात) की जानकारी मिलती है। इस अभियान में समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के नौ राजाओं को पराजित कर उनके राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। इस युद्ध को आर्यावर्त का द्वितीय युद्ध कहा गया है।

प्रयाग प्रशस्ति ~~के इन विजयों को~~ के अनुसार समुद्रगुप्त ने इन राज्यों (12 राज्यों) का समूल उन्मूलन कर उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया। इन विजयों के पश्चात समुद्रगुप्त ने सम्पूर्ण उ०भा० एवं म०भा० के कुछ भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

② **दक्षिणापथ की विजय** :- दक्षिणापथ से तात्पर्य उत्तर में विन्ध्य पर्वत से लेकर दक्षिण के कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों के बीच के क्षेत्र से है। इस क्षेत्र की विजय की जानकारी भी प्रयाग प्रशस्ति के 19वीं एवं 20वीं पंक्ति से मिलती है। दक्षिणापथ विजय में समुद्रगुप्त ने 12 राज्यों को पराजित किया परन्तु उन राज्यों को अपने साम्राज्य का अंग नहीं बनाया बल्कि

था। 12 राज्यों के प्रति 'ग्रहण मोक्षानुग्रह' नीति अपनाई अर्थात विजय के बाद उनके राज्य एवं राजाओं को वापस कर दिये गये। इससे प्रतीत होता है समुद्रगुप्त के इन विजयों का उद्देश्य आर्थिक रहा होगा और वह उनसे भेंट-उपहार आदि प्राप्त करके ही संतुष्ट हो गया। कतिपय विद्वानों ने समुद्रगुप्त के दक्षिण विजय को धर्म विजय की संज्ञा दी है।

(3) आटविक राज्यों की विजय :- प्रयाग प्रशस्ति के 21वीं पंक्ति में ही आटविक राज्यों का उल्लेख है। ये आटविक राज्य उ०प्र० के गाजीपुर जिला से लेकर म०प्र० के जबलपुर जिले तक के वन प्रदेश में फैले हुए थे उत्तर और दक्षिण भारत के बीच के आवागमन को सुरक्षित रखने के लिए इन्हें नियंत्रण में रखना आवश्यक था अतः समुद्रगुप्त ने उन्हें जीतकर पूर्णतया अपने नियंत्रण में कर लिया।

(4) सीमावर्ती (प्रत्यन्त) राज्यों की विजय :- प्रयाग प्रशस्ति के 22वीं पंक्ति में सीमावर्ती राज्यों का उल्लेख है जो समुद्रगुप्त के साम्राज्य के पूर्वी, उत्तर-पूर्वी, पश्चिम, उत्तर-पश्चिम एवं उत्तर में स्थित थे समुद्रगुप्त के पराक्रम से भयभीत होकर इन राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित राज्यों की संख्या पाँच थी और ये सभी राजतन्त्र थे ——

Scanned with CamScanner

बिन्दु | प्रांत / गणतांत्रिक राज्य | प्रश्न

① समतट — पूर्वी बंगाल अर्थात बांग्लादेश
② डवाक — असम के नवगाँव जिला
③ कामरूप — वर्तमान असम
④ कर्तृपुर — जालंधर स्थित करतारपुर (पंजाब)
⑤ नेपाल — आधुनिक नेपाल (राज्य)

इन राज्यों पर अधिकार हो जाने से ताम्रलिप्ति और बंदरगाह उनके नियंत्रण में आ गये जिससे गुप्त साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि में योगदान मिला।

गणतांत्रिक राज्यों की दूसरी श्रेणी में पश्चिम और उत्तर पश्चिम सीमा पर स्थित नौ गणराज्य हैं — मालव, अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन, सनकानीक, काक और खरपरिक। ये सभी पंजाब, मालवा, राजस्थान तथा म०प्र० के विभिन्न भागों में फैले हुए थे।

~~⑤ विदेशी शासक~~ ये सभी गणतंत्री राज्य समुद्रगुप्त को सभी प्रकार के कर देते थे, उनकी आज्ञा का पालन करते थे तथा उसे प्रणाम करने के लिए राजधानी में उपस्थित होते थे।

⑤ विदेशी शक्ति से संबंध :- प्रयाग प्रशस्ति

(क) 23वीं एवं 24वीं पंक्ति में कुछ विदेशी शासकों के नाम उल्लेखित हैं जैसे दैवपुत्र षाहि षाहानुषाहि (कुषाण), शक, मुरुण्ड एवं सिंहल (श्रीलंका) निवासी हैं। इनके विषय में बताया गया है कि ये स्वयं को सम्राट की सेवा में उपस्थित करना, कन्याओं के उपहार एवं अपने राज्यों के शासन करने के लिये

क्रम सं.	शिक्षण बिन्दु	छात्र - अध्यापक क्रिया	स्वाध्याय
		गरुड़ मुद्रा से अंकित (राजाज्ञा) के लिए प्रार्थना करना आदि विभिन्न उपायों द्वारा उसकी सेवा किया करते थे। समुद्रगुप्त के समकालीन सिंहल (श्रीलंका) के शासक मेघवर्मन ने गया में बुद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति प्राप्त करने के लिए समुद्रगुप्त के पास दूत भेजा था। मंदिर बनाने की अनुमति दी गई और गया विशाल बौद्ध विहार के रूप में विकसित हो गया। प्रयाग प्रशस्ति सिंहल के बाद आदि सर्वद्वीपवासिभिः उल्लेखित है जिसका तादात्म्य दक्षिण-पूर्वी एशिया के द्वीपों से स्थापित किया जाता है। और माना जाता है कि ये भी समुद्रगुप्त के प्रभाव क्षेत्र में थे। इस प्रकार समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर तक फैला था। समुद्रगुप्त ने अपने विजयों से निवृत्त होने के पश्चात अश्वमेधयज्ञ किया जो उसके अश्वमेध प्रकार के सिक्के से स्पष्ट होता है।	
③	साम्राज्य एवं शासन:	अपने पराक्रम एवं विजयों से समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विंध्यपर्वत तक और पूर्व में बंगाल की खाड़ी से लेकर पश्चिम में पूर्वी मालवा तक विस्तृत था। उसके इस विशाल साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी। समुद्रगुप्त ने अत्यंत निपुणता से इस विशाल साम्राज्य का शासन संचालन किया।	

Scanned with CamScanner

क्र.	शिक्षण बिंदु	छात्र अध्यापक क्रिया	श्यामपट्ट
		केन्द्रीय प्रशासन उसके प्रत्यक्ष नियंत्रण में था। प्रयाग प्रशस्ति में उसके कुछ प्रशासनिक अधिकारियों के नाम मिलते हैं यथा — सन्धिविग्रहिक, खाद्यटपाकिक, कुमारामात्य, महादण्डनायक। प्रयाग प्रशस्ति में उल्लेखित 'भुक्ति' तथा 'विषय' शब्द से स्पष्ट होता है कि उसने अपने साम्राज्य को प्रांतों में एवं प्रांतों को जिलों में विभक्त कर रखा था। समुद्रगुप्त असाधारण व्यक्तित्व वाला 'शासक था। उसमें न केवल सैनिक योग्यता थी बल्कि वह स्वयं उच्चकोटि का विद्वान तथा विद्या का उदार संरक्षक था। उसकी विद्वता के कारण उसे <u>कविराज</u> की उपाधि प्रदान की गई थी। साथ ही वह महान संगीतज्ञ था जिसे वीणावादन का बड़ा शौक था। उसके सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। उसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मंत्री नियुक्त किया था। यद्यपि वह वैष्णव धर्म को मानने वाला था तथापि उसने अपने शासन में गया में श्रीलंका के शासक मेघवर्ण को एक बौद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति प्रदान की थी। समुद्रगुप्त ने कभी पराजय का सामना नहीं किया था। उसकी वीरता पर मुग्ध होकर इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने उसे <u>'भारत का नेपोलियन'</u> की संज्ञा दी है।	

मुकेश कुमार रजक
सहायक प्राध्यापक
(राजनारायण महाविद्यालय, पं

Scanned with CamScanner